मुद्राराक्षसम्

समान्य परिचय

महाकवि विशाखदत्त द्वारा रचित **'मुद्राराक्षम्'** नाटक संस्कृत नाटक-साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इस नाटक का रचनाकाल पञ्चम शताब्दी माना जाता है। 'मुद्राराक्षम्' से तात्पर्य है- **'मुद्रया गृहीतं राक्षसमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः मुद्राराक्षसम्'**। अर्थात् मुद्रा के द्वारा राक्षस के निग्रह की घटना।

(नाटक की कथावस्तु का कक्षा में मौखिक रूप से वर्णन किया गया)

प्रमुख पात्र

चाणक्य- सम्पूर्ण नाटक में सर्वाधिक सक्रिय पात्र। समस्त घटनाओं का एकमात्र नियन्ता चाणक्य ही है। यह एक महत्त्वाकांक्षी, स्वाभिमानी, महान् राजनीतिज्ञ ब्राह्मण है। दृढ़प्रतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, प्रतिभायुक्त। अत्यन्त व्यवहार कुशल, परमशास्त्र तथा अर्थ-शास्त्र के प्रणेता भी हैं। नन्दवंश का विनाश कर अपने शिष्य चन्द्रगुप्त के राज्य को निष्कण्टक बनाने की निरन्तर चिन्ता बनी रहती हैं।

चाणक्य में प्रतिशोध की भावना कूट-कूट कर भरी है। महाराज नंद के द्वारा अपमानित होने पर ही वह अपनी शिखा मुक्त कर नंद वंश का अंत करने की कठोर तपस्या कर बैठता है। उसकी दृढ़ प्रकृति अपने शत्रु को कभी क्षमा करना पसंद नहीं करती है। पर्वतेश्वर की विषकन्या द्वारा हत्या कराना चाणक्य

की कुटिलता का द्योतक है । निकृष्ट साधनों द्वारा भी साध्य में सफलता प्राप्त करना उसका लक्ष्य बना रहता है ।

चन्द्रगुप्त- चंद्रगुप्त वीर, दृढ़शाली, प्रज्ञायुक्त, महान मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त नाटक में धीरोदात्त नायक हैं । विशाल मौर्य साम्राज्य का पालन करके भी अहंकार उसे छू तक नहीं पाया है । वह लोकरंजन तथा प्रकृति प्रेमी भी है । यह उसके कौमुदी महोत्सव के आयोजन से स्पष्ट होता है । कुछ विद्वान् चंद्रगुप्त को वैश्या से जन्मा होने के कारण वृषल कहकर संबोधित करते हैं । नाटक के अंत में केवल एक स्थान पर उसे **'भो राजन् चंद्रगुप्त!'** कहकर संबोधित किया है । **'वृषान्- वीरान् लातीति वृषलः'** अर्थात् 'वीरों का विनाशक' इस व्याख्या से उसका शूद्र जाति का संदेह दूर हो जाता है ।

राक्षस- नंदवंश का प्रधान अमात्य राक्षस है तथा अंत में वह चंद्रगुप्त का प्रधानमंत्री पद स्वीकार कर लेता है । राक्षस यह अत्यंत वैभव युक्त, यशस्वी, प्रतिभाशाली, कुलीन मंत्री है जो कि अपने स्वामी महाराज नंद के प्रति अत्यंत निष्ठावान् कूटनीतिज्ञ तथा शस्त्रविद्या में भी प्रवीण है । वह स्वार्थरहित, सहज, मानवीय भावनाओं से युक्त है ।

राक्षस आवेश में आकर अपने निर्णय संबंधी भूलों के कारण दुर्भाग्य का शिकार हो जाता है । वह अपनी स्थिति के कारण ही चाणक्य के परम भक्त जीवसिद्धि आदि जैसे व्यक्तियों पर ही विश्वास कर अपनी पराजय को आमंत्रित कर लेता है । अपनी निस्वार्थ भावना से वह नंद वंश के पुनरुद्धार के लिए

मलयकेतु का आश्रय लेता है उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है बुद्धि की अस्थिरता जिसके कारण वह अपने द्वारा नियुक्त किए गए गुप्तचरों तक को भूल जाता है।

मलयकेतु- पर्वतक पुत्र मलयकेतु । चाणक्य चलाकी से विषकन्या द्वारा मलयकेतु के पिता प्रवर्तक की हत्या करवा कर उसे भयभीत कर कुसुमपुर से भगा देता है । राक्षस यह सोच कर कि मलयकेतु पितृ वध का चाणक्य से प्रतिशोध अवश्य करेगा ऐसा सोचकर मलयकेतु से संधि करता है। किंतु मलयकेतु अपनी अविवेकी बुद्धि के कारण राक्षस के प्रति अविश्वास रखता है।

भागुरायण- भागुरायण यह गुप्त साम्राज्य का प्रमुख योद्धा तथा सेनापति सिंहबल का छोटा भाई एवं चाणक्य का विश्वास पात्र है। अत्यधिक स्वामीभक्त, वीर, साहसी, धैर्यवान एवं कर्तव्य परायण है । अत्यधिक गंभीरता एवं स्वाभिमान के साथ अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है

सिद्धार्थक- सिद्धार्थक यह चाणक्य का सर्वाधिक विश्वासपात्र, स्पष्टवादी, कुशल तथा बुद्धिमान गुप्तचर है । अपनी भावनाओं का हनन करके भी यह चाणक्य की महत्वाकांक्षा को पूर्ण करने में अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है यहां तक कि चांडाल भी बन जाता है।

चन्दनदास- यह राक्षस का परम मित्र कुसुमपुर का प्रतिष्ठित जौहरी है । राक्षस अपने परिवार को इसी के घर पर छोड़ देता है और वह भी अपना सर्वस्व खोकर भी अपने मित्र के परिवार की रक्षा करता है। चाणक्य के द्वारा राक्षस का परिवार मांगे जाने तथा न देने पर उसे प्राण दंड दिए जाने की धमकी पर चंदनदास विचलित नहीं होता है । दृढ़ता पूर्वक चंदन दास का चरित्र एवं

व्यक्तित्व त्याग, सदाचार तथा आदर से परिपूर्ण है वह राक्षस का परम मित्र आदर्श व्यक्ति है।

अन्यपात्र

विरुद्धक, निपुणक, आहितुण्डिक, शकटदास आदि।